(क) पाँच ऋषिकाओं के नाम लिखें।

उत्तर:

वैदिक काल की पाँच प्रमुख ऋषिकाओं के नाम निम्नलिखित हैं:

1. यमी
2. अपाला
3. उर्वशी
4. इन्द्राणी
5. वागाम्भृणी

(ख) 'मङ्गलम्' पाठ में सत्य की क्या विशेषता बतलाई गई है?

उत्तर:

'मङ्गलम्' पाठ के अनुसार सत्य की हमेशा जीत होती है और असत्य की कभी नहीं। सत्य का मार्ग ही देवलोक का रास्ता प्रशस्त करता है। ऋषि-मुनि देवलोक तक पहुँचने के लिए इसी सत्य मार्ग को अपनाते हैं, क्योंकि वहाँ सत्य का सबसे बड़ा खजाना है।

(ग) महान् लोग संसाररूपी सागर को कैसे पार करते हैं?

उत्तर:

महान् लोग स्वयं को अज्ञानी और दूसरों को ज्ञानी (प्रकाश स्वरूप) मानकर मृत्यु और संसाररूपी सागर को पार कर जाते हैं। वे जानते हैं कि ईश्वर को जानकर ही मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है, इसके अलावा संसार सागर से पार होने का दूसरा कोई मार्ग नहीं है।

(घ) चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में पाटलिपुत्र की रक्षा व्यवस्था कैसी थी?

उत्तर:

चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में पाटलिपुत्र की रक्षा व्यवस्था और शोभा अत्यंत उत्कृष्ट (बहुत अच्छी) थी। यूनानी राजदूत मेगास्थनीज ने अपने संस्मरणों में इसकी बहुत प्रशंसा की है।

(ङ) किन-किन विदेशी यात्रियों ने अपने संस्मरण ग्रन्थों में पटना का वर्णन किया है?

उत्तर:

पटना (पाटलिपुत्र) का वर्णन करने वाले प्रमुख विदेशी यात्री निम्नलिखित हैं:

1. मेगास्थनीज
2. फाह्यान
3. ह्वेनसांग
4. इत्सिंग

(च) पटना के मुख्य दर्शनीय स्थलों का नामोल्लेख करें।

उत्तर:

पटना के प्रमुख दर्शनीय स्थल निम्नलिखित हैं:

1. गोलघर
2. तारामंडल
3. जैविक उद्यान (संजय गांधी जैविक उद्यान)
4. उच्च न्यायालय (हाई कोर्ट)
5. सचिवालय
6. गुरुद्वारा (तख्त श्री हरमंदिर जी साहिब)

(छ) 'अलसकथा' पाठ में किसका वर्णन है?

उत्तर:

'अलसकथा' पाठ में मानव के दोषों (विशेषकर आलस्य) का वर्णन किया गया है। इसमें व्यंग्यात्मक कहानी के माध्यम से बताया गया है कि आलसी व्यक्ति बिना किसी सहायता के अपना जीवन नहीं चला सकते और वे समाज के दयावान लोगों पर ही आश्रित रहते हैं।

(ज) मंत्री वीरेश्वर की विशेषताओं का वर्णन करें।

उत्तर:

मिथिला के मंत्री वीरेश्वर स्वभाव से अत्यंत दानशील और दयावान थे। वे सभी अनाथों, गरीबों और लाचार लोगों को प्रतिदिन इच्छानुसार भोजन और वस्त्र देते थे। वे आलसियों की दयनीय स्थिति को देखकर उन्हें भी मुफ्त में भोजन और आश्रय प्रदान करते थे।

(झ) अलसशाला के कर्मचारियों ने आलसियों की परीक्षा क्यों और कैसे ली?

उत्तर:

- **क्यों ली:** कृत्रिम (बनावटी) आलसी बनकर बहुत से धूर्त लोग मुफ्त का भोजन पाने लगे थे, जिससे अलसशाला का खर्च बहुत बढ़ गया था। असली आलसियों की पहचान करने के लिए कर्मचारियों ने परीक्षा ली।
- **कैसे ली:** जब सभी सो रहे थे, तब कर्मचारियों ने अलसशाला (आलसियों के घर) में आग लगा दी। आग देखकर सभी धूर्त और बनावटी आलसी भाग गए, लेकिन चार असली आलसी वहीं सोए रहे और आपस में बातें करते रहे।

(ञ) 'मधुराविजयम्' महाकाव्य का वर्ण्य-विषय क्या है?

उत्तर:

'मधुराविजयम्' महाकाव्य की रचयिता गंगा देवी हैं। इसका वर्ण्य-विषय उनके पति कंपणराय (चतुर्दश शताब्दी) द्वारा मदुरै विजय की घटना पर आधारित है। इसमें उनके द्वारा मदुरै को जीतने और वहाँ के कुशल शासन का सुंदर वर्णन किया गया है।

(ट) आत्मा के स्वरूप का वर्णन करें।

उत्तर:

'मङ्गलम्' पाठ के अनुसार, मनुष्य के हृदय रूपी गुफा में रहने वाली आत्मा अणु से भी सूक्ष्म (छोटी) और महान से भी महान (बड़ी) है। इसे वश में नहीं किया जा सकता। कोई भी शोक रहित व्यक्ति ही ईश्वर की कृपा से इस आत्मा के वास्तविक स्वरूप को देख पाता है।

(ठ) विद्वान ब्रह्म को कैसे प्राप्त करते हैं?

उत्तर:
जिस प्रकार बहती हुई नदियाँ अपने नाम और रूप (पहचान) को छोड़कर समुद्र में विलीन हो जाती हैं, उसी प्रकार ज्ञानी और विद्वान पुरुष अपने नाम और रूप से मुक्त होकर दिव्य परमपुरुष (ब्रह्म) को प्राप्त करते हैं।

(ड) राजशेखर ने पटना का उल्लेख किस रूप में किया है?

उत्तर:

राजशेखर ने अपने काव्यमीमांसा नामक ग्रन्थ में पटना (पाटलिपुत्र) का उल्लेख शिक्षा के एक प्राचीन और महान केंद्र के रूप में किया है। उन्होंने लिखा है कि यहाँ पाणिनी, पिंगल, व्याडी, वररुचि और पतंजलि जैसे महान विद्वानों ने परीक्षा उत्तीर्ण की थी और ख्याति पाई थी।

(ढ) प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में वर्णित पटना के विभिन्न नामों का उल्लेख करें।

उत्तर:

प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों और पुराणों में पटना के निम्नलिखित नाम मिलते हैं:

1. पुष्पपुर
2. कुसुमपुर
3. पाटलिपुत्र

(ण) सिख सम्प्रदाय के लिए पटना क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर:

सिख सम्प्रदाय के लिए पटना अत्यंत पूजनीय और महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यहाँ उनके दसवें गुरु, **गुरु गोविंद सिंह जी का जन्म** हुआ था। यह स्थान आज 'तख्त श्री हरमंदिर जी साहिब' (गुरुद्वारा) के रूप में प्रसिद्ध है, जहाँ दुनिया भर से तीर्थयात्री आते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

(क) 'अलसकथा' पाठ से क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर:

'अलसकथा' पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि **आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है**। आलसी व्यक्ति का जीवन खुद के भरोसे नहीं चल सकता, उन्हें समाज के दयावान और परोपकारी लोगों के सहारे की आवश्यकता होती है। इस कहानी के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि इंसानों को बनावटी या धूर्त बनकर मुफ्त की सुख-सुविधाओं के पीछे नहीं भागना चाहिए, बल्कि कर्मठ बनकर आत्मनिर्भर होना चाहिए।

(ख) 'मङ्गलम्' पाठ का परिचय लिखें।

उत्तर:

'मङ्गलम्' पाठ उपनिषदों से संकलित है। वैदिक वाङ्मय के अंतिम भाग में मौजूद उपनिषद आध्यात्मिक सिद्धांतों को प्रकट करते हैं। इस पाठ में कुल **पाँच मंत्र** (ईशावास्य, कठ, मुण्डक और श्वेताश्वतर उपनिषदों से) संकलित हैं। यह पाठ हमें सिखाता है कि सत्य ही सर्वोच्च शक्ति है और ईश्वर ही इस संसार के नियंता हैं। इस पाठ के मंगलाचरण के रूप में पठन से मन में सत्य और ईश्वर के प्रति श्रद्धा और आध्यात्मिक चेतना जागृत होती है।

(ग) 'पाटलिपुत्र-वैभवम्' पाठ के आधार पर पटना के वैभव का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर:

'पाटलिपुत्र-वैभवम्' पाठ के अनुसार पटना (पाटलिपुत्र) प्राचीन काल से ही वैभव, संस्कृति और शिक्षा का एक बहुत बड़ा केंद्र रहा है। इतिहास में इसे गंगा के किनारे बसा एक समृद्ध महानगर बताया गया है, जिसकी तुलना स्वर्ग से की गई है। चंद्रगुप्त मौर्य के समय इसकी रक्षा व्यवस्था बहुत मजबूत थी और अशोक के काल में इस नगर का वैभव चरम पर था। यहाँ कौमुदी महोत्सव जैसे भव्य उत्सव मनाए जाते थे। मध्यकाल में यह थोड़ा पिछड़ गया, लेकिन आधुनिक काल में इसका पुनः विकास हुआ। आज भी पटना बिहार की राजधानी के रूप में ऐतिहासिक, धार्मिक (सिख और बौद्ध स्थल) और दर्शनीय धरोहरों को समेटे हुए अत्यंत समृद्ध है।

(घ) चारों आलसियों का संवाद अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर:
जब अलसशाला में आग लगाई गई, तो चारों असली आलसी भागे नहीं, बल्कि वहीं सोए-सोए आपस में बातचीत करने लगे। उनका संवाद इस प्रकार था:

- **पहला आलसी** (अपने मुंह पर कपड़ा ढककर): "अरे! यह कैसा कोलाहल (हल्ला) है?"
- **दूसरा आलसी** (आग की लपटों को महसूस करते हुए): "लगता है कि इस घर में आग लग गई है।"

- **तीसरा आलसी** (बिना हिले-डुले): "यहाँ कोई ऐसा धार्मिक व्यक्ति नहीं है, जो इस समय हम पर पानी से भीगा हुआ कपड़ा या चटाई डाल दे?"
- **चौथा आलसी** (चिढ़कर): "अरे बड़बोले! कितनी बातें करते हो? चुपचाप सो क्यों नहीं सकते?"

(च) दो दिनों की छुट्टी के लिए प्रधानाध्यापक को एक आवेदन पत्र संस्कृत में लिखें।

उत्तर:

सेवाग्राम्,
सेवायां,
श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदयः,
उच्च विद्यालयः, [अपने विद्यालय का नाम यहाँ लिखें]
[अपने शहर का नाम यहाँ लिखें]

विषयः - दिनद्वयस्य अवकाशार्थं प्रार्थनापत्रम्।

विषयः - दिनद्वयस्य अवकाशार्थं प्रार्थनापत्रम्।

महाशयः,

सविनयं निवेदनं अस्ति यत् अहम् अद्य सहसा ज्वरेण पीड़ितः अस्मि। अतः विद्यालयं आगन्तुं सर्वथा असमर्थः अस्मि।

कृपया मह्यं **[दिनांक से]** अतः **[दिनांक तक]** दिनद्वयस्य (दो दिन का) अवकाशं प्रदाय अनुगृह्णन्तु।

भवतः आज्ञाकारी छात्रः/छात्रा

नाम - [अपना नाम लिखें]

कक्षा - दशमी (X)

क्रमाङ्कः - [अपना रोल नंबर लिखें]

(i) अस्माकं विद्यालयः (हमारा विद्यालय)

1. मम विद्यालयस्य नाम [विद्यालय का नाम] अस्ति।
2. एषः एकः आदर्शः विद्यालयः अस्ति।
3. अस्मिन् विद्यालये सहस्रं छात्राः पठन्ति।
4. अत्र विंशतिः शिक्षकाः सन्ति, ये स्नेहेन पाठयन्ति।
5. विद्यालयस्य भवनं विशालं सुन्दरं च अस्ति।
6. क्रीडाङ्गणे वयं क्रीडामः।
7. मह्यं मम विद्यालयः अतीव रोचते।